

हम कोई भी गर्भ या वातावरण चुनते हैं, उसका आधार मनुष्य के पिछले जन्म के कर्म होते हैं, या उसका खुद का अनुभव उस वातावरण में ले जाता है। उसे वही माता मिलती है जिसकी फ्रिक्वेशी उसके साथ सहज जुड़ जाती है। तो आपने कभी-कभी देखा होगा कि बच्चा अपने आप ही कभी हँसता है और कभी रोने लग जाता है, तो माना जाता है कि एक से लेकर सात साल तक हम जिस

जीवन के बाद जीवन

चौदह वर्ष तक चलती रहती है। यदि आसान शब्दों में कहें, तो कह सकते हैं कि एक से सात साल तक बच्चे का भावनात्मक मन शक्तिशाली रहता है, और सात से चौदह साल में उसका तार्किक

मन पर हावी हो जाता है। इसलिए हरेक बच्चा इस उम्र में गलतियाँ कर बैठता है। इक्कीस वर्ष के बाद बुद्धि की क्रियाशीलता जब पूरी होती है, तो इक्कीस से अठाइस साल के मध्य शरीर, दिमाग

रहती है, और अगर एक शब्द में कहा जाये तो यहीं से सारे दुःख शुरू हो जाते हैं। वो अपने को ना समझने के कारण उलझन के साथ बांध के रखता है। व्यक्ति, सम्बन्धों तथा



- ब्र.कु. अनुज, दिल्ली

वस्तुओं में उसका लगाव, या मोह के कारण उन चीजों की ऊर्जा उसे प्रभावित करने लग जाती है, जिससे वो परभौतिक शक्तियों से हमेशा के लिए अंजान होता चला जाता है, और उसको चारों तरफ से बीमारियाँ घेर लेती हैं। यहाँ जो एक से सात साल का गैप बताया जा रहा है, तो हर छः साल में व्यक्ति का सम्पूर्ण शरीर बदल जाता है। उसका डी.एन.ए. बदल जाता है। इसलिए छः साल का गैप दिखाया गया है। उपरोक्त सारी बातें सभी के साथ हो रही हैं और होती ही रहेंगी। इसीलिए इस ज्ञान को हम अगर बच्चे को शुरू में ही दे दें, उसको इन सब बातों से अवगत करा दें, कि ये सारी चीजें तुम्हारे लिए अभी ठीक नहीं हैं, तुम अगर अभी अपनी बुद्धि को पवित्र रख सारी चीजों को समझ लो तो तुम्हें कभी भी जीवन को जीने में मुश्किल नहीं होगी, और यह प्रक्रिया अनवरत चलती रहेगी। यह हर बार की रिकॉर्डिंग अगले जन्म में ट्रांसफर हो जाती है और व्यक्ति फिर से वही गलती दोहराता है। तो समझदारी यह है कि इसे अभी समझकर हर जन्म को सुधार लिया जाये।

सभी इस बात से पूरी तरह से अवगत नहीं हैं कि उनका जो जीवन है, वो पूर्व जन्मों के कर्मों के आधार से ही बना है, और बनता जा रहा है। हमारी बहुत सारी ऐसी बातें हैं, जिन बातों का तार हम अनुभव तो करते हैं, लेकिन उसे स्वीकार करने में समय लगता है।



स्थान से आये होते हैं, जिस वातावरण में हम रहे होते हैं, उस वातावरण का हमें बोध होता है। उस वातावरण के अपने पुराने अहसासों के कारण हम हँसते और रोते हैं। सात वर्ष के पश्चात् दिमाग अपना आकार लेना शुरू करता है, तो माना जाता है कि बच्चा अब समझदार हो गया। और यह प्रक्रिया

मन विकसित होता है, अर्थात् बच्चा पूरी तरह से समझदार बनने की ओर अग्रसर रहता है। वो समझना शुरू कर देता है। चौदह से इक्कीस वर्ष के बीच बुद्धि या समझ या अवेयरनेस भावनात्मक तथा तार्किक मन के मध्य उलझ जाती है, अर्थात् इमोशनल माइंड या भावनात्मक मन उसके तार्किक

व बुद्धि के मिश्रण को व्यक्ति अनुभव करता है। अर्थात् व्यक्त उलझ जाता है कि मैं कौन हूँ, क्या हूँ, क्या करूँ, क्या ना करूँ। अठाइस वर्ष के बाद उसका जीवन उसकी स्वयं की बुद्धि पर निर्भर करता है। अगर मनुष्य स्वयं से आगाह नहीं होता, तो उसकी चेतना शरीर और बुद्धि के बीच अटकी

उपलब्ध पुस्तकें जो आपके जीवन को बदल दे



प्रश्न: मैं मथुरा से हूँ। मेरा एक बेटा है। उसकी शादी भी हो चुकी है। 3 साल पहले वो दिल्ली जॉब के लिए गया था। कुछ समय तक वो फोन भी करता था, परंतु कुछ समय के बाद उसके फोन आने बंद हो गए। 3 साल हो गए, उसका कोई पता नहीं चल रहा है। हम बहुत चिंतित रहते हैं। उसकी पत्नी भी उदास रहती है। हम क्या करें?

उत्तर: आप पहले तो 108 बार लिखें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। फिर एक घण्टा योगाभ्यास करें और योगाभ्यास के बाद अपने बच्चे को आत्मा रूप में देखकर उसका आह्वान करें कि बेटा, हम तुम्हें बहुत याद करते हैं, तुम जहाँ भी हो वापस आ जाओ। यह कार्य आपको 21 दिन लगातार करना है। एक दिन भी मिस ना हो। रोज उसी समय पर योगाभ्यास करना है। 21 दिन के बाद हमें पूर्ण विश्वास है कि आपका बेटा आपको ज़रूर मिल जाएगा। पूर्व में ऐसे 5 केस बिल्कुल ठीक हो गए हैं। माताओं के खोए हुए बेटे उन्हें सालों के बाद मिल

गए हैं।

प्रश्न: मैं 30 वर्षीय महिला हूँ। मेरे पति गलत राह पर हैं, परंतु मैं अच्छी योगी बनना चाहती हूँ। मैं इसके लिए क्या करूँ? क्या मैं अपने पति को छोड़ दूँ? मैं ब्यूटीशियन भी हूँ। मेरा यह कार्य बहुत अच्छा चले, इसके लिए कोई उपाय सुझायें?



मन की बात

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

उत्तर: पति को छोड़ने की बात तो आप बाद में सोचना, अभी तो उसके कल्याण का सोचें। इसके लिए आधा घण्टा रोज उनको योगदान करें और पवित्र भोजन कराएँ। भोजन बनाते हुए बार-बार याद करें कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ और जब उन्हें भोजन कराएँ तो ये संकल्प करें कि ये पवित्र भोजन खाने से इनका चित्त पवित्र हो जाए।

प्रश्न: परमात्मा ने तनावमुक्त रहने का इशारा दिया है, तो तनावमुक्त जीवन जीने के लिए क्या करें?

उत्तर: तन में आने से तनाव बढ़ता है, कुछ समय इसकी स्मृति से परे रहा करें तो तनाव कम होगा। मन की शक्तियों को योग-अभ्यास द्वारा स्वमान से बढ़ाएं तो हर बात खेल लगेगी। जीवन में कुछ बातों को स्वीकार करके हल्के रहने का अभ्यास करें।

विश्व ड्रामा के ज्ञान को यूज करके स्वयं को निश्चित रखने की कला सीखें। सम्बन्धों में निष्काम हो जायें व सहज भाव से रहें। अमृतवेले परमात्म-प्यार व मुरली का सुख लेकर स्वयं को तनाव-मुक्त करें। विचारों को उदार व महान बनाएं तो हर बड़ी बात भी छोटी लगेगी।

प्रश्न: मुझे छोटी-छोटी बातों में फीलिंग बहुत आती है, फिर सारा दिन मैं उदास रहती हूँ। यह मेरी बड़ी कमजोरी है, मैं इससे मुक्त होकर शक्तिशाली बनना चाहती हूँ।

उत्तर: फीलिंग सचमुच आधी मृत्यु के समान है। इससे खुशी भी मर जाती

है व उमंग-उत्साह भी। आप प्रशंसा की पात्र हैं जो आप इससे मुक्त होना चाहती हैं। यह भी एक तरह की अपवित्रता ही है। लक्ष्य बना लो, मुझे 6 मास अच्छी साधना करके स्वयं को फीलिंग के फ्लू से मुक्त करना है। ये संकल्प कभी न करना कि कोई मुझे कुछ कहे नहीं। हम गलती करेंगे तो बड़े तो कुछ कहेंगे ही। इसलिए हल्के रहकर दूसरों की बात या डाँट सुनना है। प्रतिदिन एक अव्यक्त मुरली पढ़कर उसकी 5 बातें लिखनी हैं। प्रतिदिन सबेरे उठते ही ये संकल्प 7 बार करना है 'मैं फीलिंग से मुक्त हूँ और मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ।'

6 मास तक 3 स्वमान प्रतिदिन 25 बार याद करने हैं। 1. मैं एक महान आत्मा हूँ, 2. मैं विजयी रत्न हूँ, 3. मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। साथ-साथ प्रतिदिन विशेष इसके लिए एक घण्टा योग भी करें। ये सब करने से जीवन से फीलिंग समाप्त हो जायेगी और आप सदा खुश रहने लगेगी। यह भी ध्यान रहे कि फीलिंग आने पर सेवा व भोजन नहीं छोड़ना है।



पटना सिटी-बिहार। एस.डी.ओ., आई.ए.एस. योगेन्द्र सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रानी।



मेहम-हरियाणा। न्यायाधीश आर्या शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. चेतना।



चुरू-राज। जिला कलेक्टर ललित गुप्ता को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुमन।



सिरसा-हरियाणा। विधायक मन्खन सिंगला को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बिन्दु।